छाँटकर करना चाहिए। इस प्रकार 10–15 दिनों में पूरी खुदाई करते हैं। बाजार में ले जाने से पूर्व उखड़ी हुई मूली की जड़ें पानी से अच्छी धोकर साफ कर लें और मोटी व पतली का बण्डल अलग–अलग बना लें, जिससे उठाने और बेचने दोनों में सहुलियत होती हैं। जड़ों के साथ केवल हरी मुलायम पत्तियों को छोड़कर पीली व पुरानी पत्तियों को तोड़ कर निकल देनी चाहिए।

उपज

मूली की पैदावार इसकी किस्में, भूमि, खाद व उर्वरक तथा अतःसस्य कृशि क्रियाओं के ऊपर निर्भर करती है। एशियाटिक या बड़ी किस्मों की औसत उपज 250–400 कुन्तल बुआई के 35–50 दिन में और छोटी किस्में या यूरोपीन मूली की उपज 100–150 कुन्तल प्रति हे. बुवाई के 20–25 दिन बाद प्राप्त होती हैं।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

माँहू

साधारणतः ये कीट हजारों की संख्या में पत्तियों की निचली सतह, पौधों के शाखाओं तथा फूलों पर चिपके रहते हैं शिशु एवं वयस्क दोनों क्षतिकारक होते हैं, और पत्तियों एवं फूलों का रस चूसकर पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। जिससे फसल की बढ़वार रूक जाती है। और पत्तियॉ पीली पड़ने लगती है। इस कीट का प्रकोप जनवरी व फरवरी में अधिक होता है।

नियंत्रण

मॉहू से ग्रसित पौधे के भाग को अलग करके उसे नश्ट कर देना चाहिए। जैविक विधि से नियंत्रण के लिए 4 प्रतिशत नीम गिरी या अजादीरैक्टिन 0.03 प्रतिशत@ 5 मिली/लीटर पानी के घोल में किसी चिपकने वाला पदार्थ के साथ मिलाकर छिड़काव करने से भी माँहू का नियंत्रण हो जाता है। आवश्यकतानुसार कीटनाशी जैसे एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एसपी.@ 0.15 ग्राम/लीटर या डाइमेथोएट 30 प्रतिशत ईसी. @1.5 मिली/लीटर या क्वींनालफास 25 ईसी. @ 2 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर चिपकने वाला पदार्थ के साथ मिलाकर एक या दो बार 10 से 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

रोयेदार सूड़ी

इस कीड़े का सूड़ी भूरे रंग का रोयेदार होता है एवं ज्यादा संख्या में एक जगह पत्तियों को खाते हैं। बहुत जल्दी एक से दुसरे पौध पर फैल जाते हैं। इस कीट से बचाव के लिए जब सूड़ी छोटे आकार के होते है एवं एकत्र पाये जाते है

नियंत्रण

ग्रसित पत्तियों को कीड़ा सहित हटाकर नश्ट कर देना चाहिए। आवश्यकतानुसार कीटनाशी जैसे रेनेक्सपायर 18.5 प्रतिंशत एससी. @ 0.1 मिली/लीटर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी. @ 0.5 मिली/लीटर या इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एससी. 0.5 मिली/लीटर या स्पाइनोसैड 2.5 एससी. @1.5 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर चिपकने वाला पदार्थ के साथ मिलाकर 10 या 15 दिन के अंतराल पर एक या दो बार छिड़काव करें।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

डॉ. विजेन्द्र सिंह

निदेशक

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान

पो.बा. नं. 01, पो. आ.– जक्खिनी (शाहँशाहपुर), वाराणसी–221 305, उत्तर प्रदेश

दूरभाष– 0542–2635236/237/247; फैक्स– 0543–229007

ई–मेलः director.iivr@icar.gov.in वेबः www.iivr.org.in

संकलन–बी.के. सिंह, बी. सिंह, प्रदीप कर्माकर, एम.एच. कोदंडाराम, रंजीत सिंह गुर्जर, शुभदीप रॉय, सुनील गुप्ता

प्रकाशक– निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भा.स.अनु.सं., वाराणसी

तृतीय संस्करण– 5000 प्रतियाँ, जनवरी 2015

प्रसार पुस्तिका सं. 18/2015

मूली की वैज्ञानिक खेती

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agri search with a human touch

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान

शाहँशाहपुर (जक्खिनी), वाराणसी- 221 305, उ.प्र.

मूली की वैज्ञानिक खेती

जड़ वाली सब्जियों में मूली एक महत्वपूर्ण एवम् शीतलता प्रदान करने वाली (ठंडी तासीर), कब्ज दूर करने वाली एवम् भूख बढ़ाने वाली सब्जी है। इसका उपयोग सलाद, अचार तथा कैण्डी बनाने के लिए किया जाता है। बवासीर, पीलिया और जिगर की बीमारी में इसका उपयोग अत्यधिक लाभप्रद है। इसमें विटामिन ए और सी तथा खनिज लवण फास्फोरस, पोटैशियम, कैल्शियम इत्यादि पाये जाते हैं इसके जड़ों के साथ–साथ इसकी हरी पत्तियाँ भी सलाद व सब्जी के रूप में प्रयोग की जाती हैं। इसकी खेती पूरे वर्ष की जाती है।

जलवायु

एशियाई मूली अधिक तापमान के प्रति सहनशील है लेकिन अच्छी पैदावार के लिए ठंडी जलवायु उत्तम होती है। ज्यादा तापमान पर जड़ें, कठोर तथा चरपरी हो जाती है। इसकी खेती के लिए 12–16 डिग्री सेल्शियस तापमान उपयुक्त होता है।

भूमि और भूमि की तैयारी

इसकी खेती प्रायः सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। बलुई दोमट और हल्की दोमट भूमि में जड़ों की बढ़वार अच्छी होती है। मटियार भूमि, खेती के लिए अच्छी नहीं मानी जाती है। मूली की खेती करने के लिए गहरी जुताई की आवश्यकता होती है क्योंकि इसकी जड़ें गहराई तक जाती हैं अतः गहरी जुताई करके मिट्टी भुरभुरी बना लेते हैं।

उन्नत किस्में

एशियाई किस्में (फरवरी से सितम्बर तक)

काशी श्वेता, काशी हंस, अर्का निशांत, जापानी व्हाइट, पूसा रेशमी, पूसा चेतकी, पूसा देशी, हिसार मूली नं.–1, कल्याणपुर–1, जौनपुरी एवम् स्थानीय किस्में।

यूरोपियन किस्में (अक्टूबर–फरवरी तक)

व्हाइट आइसकिल, रैपिड रेड व्हाइट टिप्ड, स्कारलेट ग्लोब, पूसा हिमानी।

खाद एवं उर्वरक

मूली शीघ्र तैयार होने वाली फसल है। अतः मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में खाद व उर्वरक होना अत्यन्त आवश्यक है। अच्छी पैदावार के लिए एक हेक्टेयर खेत में 20–25 टन अच्छी प्रकार सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट बुआई से 25–30 दिन पूर्व प्रारम्भिक जुताई के समय खेत में मिला देना चाहिए। इसके अतिरिक्त 50 किग्रा. नत्रजन, 25 किग्रा फास्फोरस और 25 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से देने की आवश्यकता पड़ती है। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के पहले खेत में डाल देनी चाहिए। आधी नत्रजन की मात्रा बुआई के 20 दिन बाद शीतोश्ण किस्मों में और 25–30 दिन बाद एशियाई किस्मों में टाप ड्रेसिंग के रूप में दें। परन्तु ध्यान रहे कि उर्वरक पत्तियों के ऊपर न पड़े। अतः यह आवश्यक है कि यदि पत्तियाँ गीली हो तो छिड़काव न करें।

बीज दर

एशियाई किस्मों में 6–8 किग्रा और यूरोपियन किस्मों की 8–10 किग्रा बीज प्रति हे. की दर से आवश्यकहोती है।

बुआई का समय

उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में एशियाई मूली बोने का मुख्य समय फरवरी से सितम्बर तथा यूरोपियन किस्मों की बुआई अक्टूबर से जनवरी तक करते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में बुआई मार्च से अगस्त तक किया जाता है।

बुआई

बुआई के समय खेत में नमी अच्छी प्रकार से होनी चाहिए। खेत में नमी की कमी होने पर पलेवा करके खेत तैयार करते हैं। इसकी बुआई या तो छोटी–छोटी समतल क्यारियों में या 30–45 सेमी की दूरी पर पर बनी मेड़ों पर करते हैं। यदि क्यारियों में बुआई करनी हो तो 30 सेमी के अन्तराल पर कतारे बना ले और उन कतारों में बीज बोये। मेड़ों पर बीज 1–2 सेमी गहराई पर लाइन बनाकर बोते हैं मेड़ों पर बुआई करने से जड़े अच्छी बनती हैं। बीज जमने के बाद पौधों की दूरी 6–7 सेमी रखते हैं। यदि पौधे घने हो तो उन्हे उखाड़ देना चाहिए।

सिंचाई

वर्शा ऋतु की फसल में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती परन्तु गर्मी की फसल को 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई अवश्य करते रहना चाहिए। शरद कालीन फसल में 10–15 दिन के अन्तर पर सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। मेड़ों पर सिंचाई हमेशा आधी मेड़ ही करनी चाहिए ताकि पूरी मेड़ नमी युक्त व भुरभुरा बना रहे। इससे जड़ों के बढ़वार में सुगमता होती है।

अंतः सस्य क्रियायें

यदि खेत में खरपतवार उग आये हो तो आवश्यकतानुसार उन्हें निकालते रहना चाहिए। रसायनिक खरपतवार नाशक जैसे स्टाम्प, 3.0 किग्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के 48 घंटे के अन्दर प्रयोग करने पर प्रारम्भ के 30–40 दिनों तक खरपतवार नहीं उगते। निकाई–गुड़ाई 15–20 दिन बाद करके मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए। मूली की जड़ें मेड़ से ऊपर दिखलाई दे रही हो तो उन्हें मिट्टी से ढ़क दें अन्यथा सूर्य के प्रकाश के सम्पर्क से वे हरी हो जाती है जिससे बाजार भाव तो घटता ही है साथ साथ खाने में भी अच्छी नहीं लगती है।

खुदाई तथा बाजार के लिए तैयारी

मूली को सदैव नरम और कोमल अवस्था में ही खुदाई करनी चाहिए। मूली की खुदाई एक तरफ से न करके तैयार जड़ों को